रात्रि क्लास 20/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

भगवान सर्वव्यापी नहीं है, गीता का भगवान कृष्ण नहीं है, पतित–पावन गंगा नहीं है और कल्प की आयु लाखों वर्ष का नहीं है, शिव–शंकर एक नहीं। यह मुख्य2 बातें जो हैं यह छापकर बड़े अक्षरों में लगा दो; क्योंकि यह है दुनिया के समझ से निराली बातें। यह मूल बात हो तो मनुष्य पूछे। बाप ने समझाया है बच्चों की विजय इन बातों पर ही होगी। तुम सभी विद्वान पंडित के बरखिलाफ हो जावेंगे। यह है नई बातें दुनिया के विरुद्ध। बहुत ऐसे–ऐसे मुख्य बातें हैं। तुम बैठ विचार कर निकालेंगे तो लिस्ट निकल आवेगी। तुम ब्रह्माकुमारियाँ बतलाती हो हमको ब्रह्मा नहीं समझाते हैं। ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा शिवबाबा सुनाते हैं। शिवबाबा जो सभी आत्माओं का बाप है। सभी आत्माओं का बाप एक है झट समझ जावेंगे। सभी भाई2 हैं। तो जरूर बाप एक है। उनसे नई दुनिया का ही वरसा मिलेगा। खास2 बातों पर अटेन्शन जाये तो उन पर ही समझाया जाये तो अच्छा है। और सभी में अच्छा है यह ड्रामा का चक्र। तुम समझा सकते हो यह नर्क है। वह स्वर्ग है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया। इस पर तुम बहुत समझा सकते हो। बाप तो श्रीमत देते हैं। विद्वानों को समझाने में फिर भी अच्छा है। वह कुछ डिवेट भी करेंगे। तुम समझावेंगे हमको कौन समझाते हैं। सबसे अच्छा पार्ट है बेहद के बाप का। सबसे ऊँच पार्ट है। तो बहुतों को भी ऐसे बाप से ऊँच पद मिलेगा। अन्दर में बुद्धि चलती है यह यह समझाना चाहिए। जहाँ भी समझाने की मार्जिन है तो भागना चाहिए। सर्विस का जिनको शौक होगा वह भागेंगे। वह नहीं कहेंगे इतना दूर कैसे जावेंगे। बाबा कहते हैं सर्विस के लिए भल खर्चा करना पड़े हर्जा नहीं है। ऐसे नहीं बहुत दूर है। 8/10 माइल दूर है सो क्या। ट्रेन से भी भागना चाहिए। खर्चा का ख्याल नहीं रखना है। सर्विस का शौक चाहिए। सो भी जो अनन्य बच्चे हैं उन्हों को तो सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। यह अहंकार न हो हम महारथी हूँ। महारथी हो तो भागते रहना चाहिए। खाना भी वहाँ सर्विस पर जाकर खाना चाहिए। बाबा अच्छी तरह से जानते हैं बहुतों में देह–अभिमान का रोग है। थोड़ी महिमा होने से ढीला पड़ जाते हैं। नहीं तो सर्विस में खूब चक्र लगाते रहना चाहिए। ऑफिस का टाइम पूरा हुआ भागा सर्विस पर। थोड़ा बहुत खाया यह भागा। यहाँ भी सर्विस की डायरैक्शन मिलते हैं। बाबा डायरैक्शन दे रहे हैं। जिसके मन में आता है हम अपने सेन्टर का करे या फलानी की सर्विस करे। यह सभी है देह–अभिमान। भल बाबा जानते हैं ड्रामा अनुसार ही होता है फिर भी बाप का काम है आगे लिए चुस्त बन बहुत सुस्त हैं। नहीं तो सर्विस बहुत अच्छी कर सकते हैं। ज्ञान मार्ग में आराम पसन्द नहीं। सर्विस पर कब नींद करते हैं क्या? तो इसमें भी नींद क्यों करनी चाहिए। यहाँ तो बहुत नींद करते हैं। यहाँ तो सर्विस ही नहीं। सेन्टर पर तो बहुत सर्विस है। सर्विस होते अगर नींद करते हैं तो बाबा आराम पसन्दी देह–अभिमानी समझते हैं। सभी को सर्विस पर भागते रहना चाहिए। ईश्वरीय सर्विस की खुमारी हो। बाप को भी खुमारी है हम जाकर .... भी को पावन बनावें। यह है बेहद की सर्विस की खुमारी। तो बच्चों को भी बेहद की खुमारी रहनी चाहिए। ..... भी कल्प2 बाद तुम जानते हो बाप जो यह सर्विस सिखलाते हैं इनसे तो बहुत तकदीर जागती है। मुख्य2 बात ..... सारी दुनिया के विपरीत में है वह तुम ही समझा सकते हो। समझते हैं इन्हों को ब्रह्मा बाबा समझाते होंगे। ब्रह्मा को सुनाने वाला कौन वह समझते नहीं है। गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु..... कहते हैं ना। आखरीन तीनों में (ब)ड़ा कौन? कौन किसको ज्ञान देता है? सुप्रीम कौन? कुछ भी समझते नहीं। तुम कहते हो यह तीनों गुरु नहीं। ..... एक सदगुरु है। बाकी देहधारी सच्चा गुरु हो नहीं सकता। बाप को अपना देह नहीं है वही सुप्रीम है। कृष्ण को कब गुरु नहीं कह सकते। ब्रह्मा को भी नहीं तो शंकर को भी नहीं कहा जा सकता। यह भी दिखाना ..... एक ही सुप्रीम बाप, टीचर, गुरु है। बच्चे जानते हैं वह है निर्वाणधाम। वह सुखधाम। सुखधाम में थोड़े मनुष्य। बाकी सभी निर्वाणधाम में चले जाते हैं। कृष्ण तो है ही सतयुग में बैठा हुआ। तो बच्चों को विचार–सागर–मंथन कर सर्विस में लग जाना है। बाप को समझाना चाहिए कैसे–2 लोग आते हैं क्या–2 पूछते हैं। गोले पर ..... ले जाते हैं; क्योंकि तुमको तो समझानी है ना। और कोई समझा न सके। अच्छा बच्चों को गुडनाइट। नमस्ते।

: – शिवबाबा और वरसा याद है? – :